सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न महिला एवं बाल मानव अधिकारों के हनन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (2011–2019)

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
के अन्तर्गत राजनीति शास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

पर्यवेक्षिका

डॉ. अंजू शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

शोधार्थिनी

रचना चौधरी

समाज विज्ञान संकाय, समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग
दयालबाग एजुकेशन इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा
2020

प्रस्तावना :– सीरिया, आधिकारिक रूप से अरब गणराज्य दक्षिण –पश्चिम एशिया का राष्ट्र है जो, भारत के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यह मध्य पूर्व का एक छोटा सा देश है, जिसके पश्चिम में लेबनॉन, दक्षिण में जॉर्डन, पूर्व में ईराक तथा इसके उत्तर में तुर्की स्थित है। यह भूमध्य सागर के पूर्वी किनारे पर तथा लेबनॉन और तुर्की के मध्य में स्थित है। सीरिया की राजधानी दमिश्क है, जिसको सीरिया का सबसे समृद्ध शहर माना जाता है। सीरिया को प्राचीन सभ्यता का केन्द्र माना जाता है जो नव–पाषाण काल से उत्पन्न माना जाता है। इसी काल में कृषि तथा पशु–पालन की सभ्यता उत्पन्न हुई थी।

सीरिया की भागोलिक पृष्ठभूमि :–

आधिकारिक नाम – सीरियन अरब रिपब्लिक

क्षेत्र फल – 185,180 वर्ग किमी

राष्ट्राध्यक्ष – राष्ट्रपति : बशर अल असद, 17, जुलाई, 2000 से वर्तमान तक

सरकार – अध्यक्षीय गणतंत्र

सत्तारूढ़ दल – बाथ समाजवादी दल

भाषा – अरेबिक, अग्रेजी

जनसंख्या – 20.4 मिलियन : 52% पुरूष, 48% महिला (UN, 2008)

राजधानी – दमिश्क

प्रमुख शहर – अलैप्पो, 3.164 मिलियन, होम्स, 1.369 मिलियन, हामा, 933.000 मिलियन

अर्थव्यवस्था – कृषि, वन विभाग, मत्स्य पालन, गैस, तेल की फैक्ट्रियाँ।

मुद्रा – सीरियन पाउण्ड

धर्म – आधिकारिक रूप से धर्म निरपेक्ष राष्ट्र : मुस्लिम 87% (सुन्नी 74%, शिया 13%), ईसाई 10%, ड्रूज 3%

https://www.infoplease.com

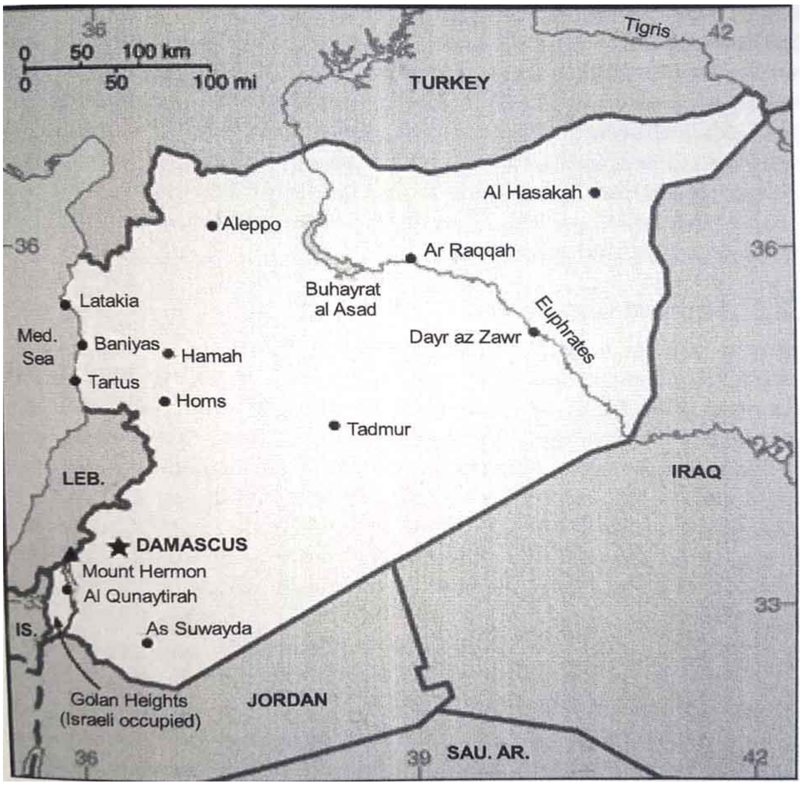

(Dhingra& Katariya 2017:3)

राजनीतिक इतिहासः– 1919 में कुछ समय के लिए सीरिया हाशमी राजवंश के अमीर फैजल के हाथों में आया। ये बाद में ईराक के राजा बने। मार्च 1920 में सीरियन नेशनल कांग्रेस ने फैजल को सीरिया का राजा घोषित कर दिया, परन्तु इनका शासन जल्द ही समाप्त हो गया जब सीरियन अरब फोर्स और फ्रांस की सेना के मध्य मेसलून का युद्ध हुआ जिसमें फ्रांस की विजय हुई और सैनिकों ने सीरिया पर आधिपत्य कर लिया। सितम्बर 1936 में सीरिया और फ्रांस के मध्य एक संधि हुई जिसमें फ्रांस ने सीरिया को स्वतंत्र करने की बात की , परन्तु इस संधि को फ्रांस की कार्यपालिका के द्वारा समाप्त कर दिया गया। 1940 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सीरिया पुनः फ्रांस के अधीन आ गया। 1941 में सीरिया ने पुनः स्वतंत्र होने की घोषणा की और प्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया , परिणामस्वरूप सीरिया विजयी रहा तथा 1 अप्रैल 1946 को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया इसके बाद 1946 में सीरिया ने फ्रांस से स्वाधीनता प्राप्त कर ली और अबर लीग का सदस्य बन गया। सीरिया और पश्चिमी देशों के मध्य सम्बन्ध अच्छे नही है, इसका एक मुख्य कारण यह है कि सीरिया अरब राष्ट्रीयता से बहुत प्रभावित था परन्तु पश्चिमी देश इसका विरोध करते हैं। (Dhingra, Kataria 2017:9)

फ्रांस से स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद सीरिया अपने निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र था और वहाँ सैन्य शासन स्थापित हुआ परन्तु सीरिया को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता थी जो उसकी शासन सत्ता को स्थायित्व प्रदान करे और इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए सीरिया के सबसे बडे दल बाथ–समाजवादी दल के प्रभावशाली नेता हाफिज अल–असद को 1970 में सीरिया का राष्ट्रपति घोषित किया गया जिनके काल में सीरिया को स्थायित्व एवं नियन्त्रणता प्राप्त हुई। 1973 में सीरिया ने संविधान को अपनाया इसके संविधान के अनुसार राष्ट्रपति मुसलमान होना चाहिए लेकिन इस्लाम राजधर्म नहीं होगा। 1970 से 2000 तक इन्होने सीरिया को नेतृत्व प्रदान किया, जो सीरिया के इतिहास में सबसे लम्बा शासन काल माना जाता है।

सीरिया में गृहयुद्ध की श,रूआत –

संवैधानिक परिवर्तन–: सन् 2000 में हाफिज अल–असद की मृत्यु के बाद सीरिया की सत्ता उनके बेटे बशर अल–असद के हाथो में सौपी जानी थी, परन्तु बशर अल–असद राष्ट्रपति प्रत्याशी के लिए दावेदार नही हो सकते थे, इसलिए उन्हें राष्ट्रपति पद के दावेदार बनाने के लिए संविधान में एक संसोधन किया गया जिसके अन्तर्गत राष्ट्रपति पद की दावेदारी के लिए आयु सीमा 40 से कम करके 34 कर दी गई और बशर अल–असद राष्ट्रपति के लिए प्रचण्ड बहुमत से विजयी रहे।

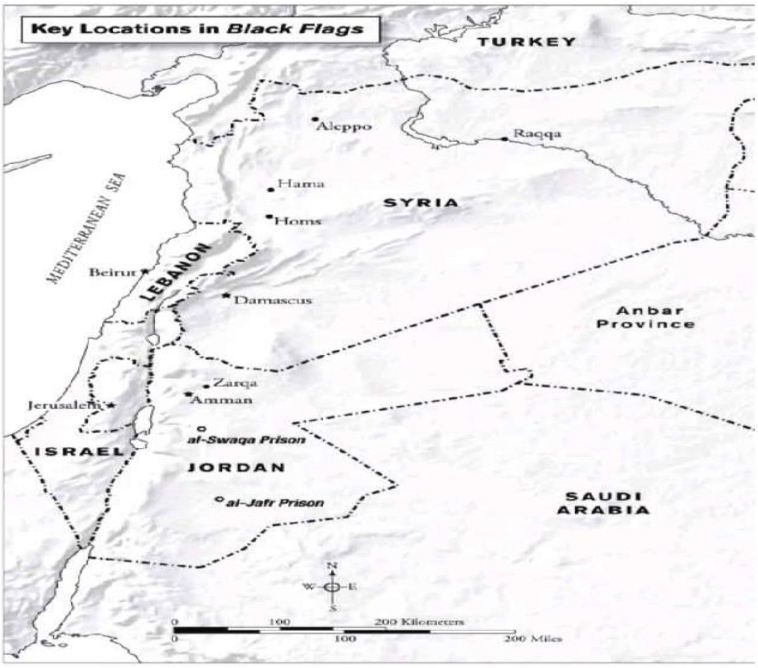

(Warrick 2015:7)

वर्ग विभाजन : बशर अल असद को राष्ट्रपति बनाने के लिए संविधान में संसोधन तो हुआ, परन्तु वहां की जनता का एक भाग इस निर्णय से संतुष्ट नही था। उन लोगों का मानना था कि यह संसोधन किसी तानाशाही से कम नही है इस तरह तो कोई भी सरकार अपने राजनैतिक हितों की पूर्ती के लिए संविधान में अपने अनुसार संसोधन कर सकती है जो जनता के हितों के विरूद्ध है। यहीं से इस राजनैतिक मुद्दे को विरोध का सामना करना पड़ा और धीरे–धीरे यह एक आन्दोलन में परिवर्तित हो गया जो तत्कालीन सरकार के विरूद्ध आवाज उठाने लगा। इस तरह सीरिया में दो वर्ग बन गए एक वर्ग वो जो असद सरकार का विरोध कर रहा था और दूसरा वर्ग इस सरकार के समर्थन में खड़ा था। इन दोनो वर्गो के मध्य आन्दोलन शुरू हो गया जिसको नियन्त्रण करने में सरकार ने अपनी तरफ से सशस्त्र प्रयास किए जिसमें हथियारो का प्रयोग करने लगे तथा विरोधियों के द्वारा भी यही किया जाने लगा।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति बशर अल–असद को सत्ता से हटाने के लिए जो विरोध सीरिया में प्रारम्भ हुआ जिससे सीरिया में राजनैतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई और इसके परिणामस्वरूप सीरिया आंतरिक रूप से कमजोर बन गया।

ISIS - इस्लामिक स्टेट इराक एण्ड सीरिया (Islamic State Iraq and Syria)। यह एक आंतकी संगठन है। ये उग्र विचारधारा का समर्थन करतें है जो सुन्नी मुस्लिम का बहुमत रखतें है। इस संगठन का नेतृत्व अबू बकर अल बगदादी के हाथों में है। इस संगठन को यूनाइटेड संघ द्वारा एक आतंकी संगठन घोषित किया गया है। वर्तमान में यह संगठन ईराक, सीरिया के क्षेत्रों में अपने प्रभाव का विस्तार कर रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य अपनी उग्र विचारधारा को फैलाना एवं मुस्लिम बहुल देशों में अपनी प्रभुसत्ता कायम करना है जैसे अब ये संगठन सीरिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। (https://www.rand.org)

2011-12 तक सीरिया में व्यापक गृहयुद्ध प्रारम्भ हो गया तथा इसमें ईरान ,रूस ,सऊदी अरब और अमेरिका का सीधा हस्तक्षेप होने लगा एवं आतंकी संगठन ने सीरिया में लगातार हिंसा तथा हथियारो का प्रयोग जारी रखा इन सब कारणों से सीरिया में अशान्ति उत्पन्न होती गई। सीरिया में राजनीतिक अस्थिरता से उत्पन्न बच्चों व महिलाओं के मानव अधिकारों का हनन होने लगा। सीरिया इस समय

विश्व में जिहादी आतंकबाद के केन्द्र को दर्शाता है। आंतकी संगठन ISIS के द्वारा महिलाओं का सैक्स मजदूर के रूप में प्रयोग होता रहा जिसका महिलाओं द्वारा विरोध करने पर उनकों शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित भी किया जाता था। इसके अलावा छोटे–छोटे बच्चों की तस्करी का कारोबार होता था।

The United Nations Children's Fund की रिपोर्ट के अनुसार जनवरी 2014 में 10,000 बच्चे इस गृहयुद्ध में मारे गए।[1] ISIS के द्वारा भी छोटे–छोटे बच्चो पर अत्याचार की घटनाए सामने आती रहती हैं। ISIS के गढ़ कहे जाने वाले रक्का शहर में सैकड़ो लोगों की भीड़ के सामने एक 3 वर्ष के बच्चे को मौत की सजा दे दी गई। ये बच्चा अपने दोस्तो के साथ खेल रहा था और इसी खेल में उसने ईश्वर के नाम की शपथ ले ली जो उसकी मौत का कारण बन गई। आई.एस. ने इस ईश्वरीय शपथ को खलीफा का अपमान मानते हुए बच्चे को सजा सुनाई।

मानव अधिकार- मानव अधिकार मनुष्य के जन्मसिद्ध अधिकार हैं जिनको किसी जाति, धर्म, लिंग, भाषा तथा स्थान के आधार पर अलग नहीं किया जा सकता। इनमें नागरिक और राजनैतिक अधिकार शामिल हैं जैसे कि जीवन और आजाद रहने का अधिकार, कानून के सामने समानता, भोजन का अधिकार, काम करने का अधिकार एवं शिक्षा का अधिकार आदि। (https://www.un.org)

CEDAW (Convention on the Elimination of all forms of Discrimination Against Women)

इसको UN की जनरल असेम्बली में 1979 में अपनाया गया। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के अधिकारों का वर्णन करता है। इसमें यह सुनिश्चित किया गया है कि महिलाओं के अधिकारों से सम्बन्धित किसी भी तरह का भेदभाव अपनाया जाता है तो उस देश को राष्ट्रीय स्तर पर भेदभाव समाप्त करने के लिए क्या सुधार किए जाए। इस सम्मेलन में सभी राज्यों ने इसको स्वीकार करके महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण नीति का बहिष्कार किया, जिसमें सम्मलित है –

- अपने संवैधानिक तंत्र में इस धारणा को स्वीकार करना कि महिला एवं पुरूष समान है ऐसे नियम जो महिलाओं के विरूद्ध है उनका बहिष्कार करना एवं उन पर रोक लगाकर ऐसे नियम बनाना जो भेदभाव के विरूद्ध हो।

- ऐसे सामाजिक संस्थानों की स्थापना करना जो महिलाओं के भेदभाव के विरूद्ध प्रभावशाली हो, और
- उन सभी नियमों का बहिष्कार करना जिसमें किसी व्यक्ति, संस्था द्वारा महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

सीरिया संकट से विश्व राजनीति के पटल पर मानव अधिकारों के हनन का जो स्तर देखा गया है उससे यह स्पष्ट होता है कि इस गृहयुद्ध का परिणाम क्या होगा और कहाँ रूकेगा किसी के लिए यह स्पष्ट करना सम्भव नही है। अधिकार सबके लिए सामान हैं महिलाओं को भी हिंसा मुक्त, दासता मुक्त एवं भेदभाव मुक्त जीवन जीने का अधिकार है। महिलाओं के अधिकार मानव अधिकार हैं उनको शीर्ष पर रखा जाता है परन्तु आज भी पुरे विश्व में महिलाओं और लड़कियों को लिंग के आधार पर उनके अधिकारों से अलग रखा जाता है। सीरिया में महिलाओं और बच्चों के अधिकारों का जिस तरह से हनन हो रहा है ये चिंता की बात है वहाँ उनकी स्वतंत्रता का व्यापक रूप से हनन हो रहा है, महिलाओं को जीने का अधिकार है परन्तु सीरिया में उनकी हत्या हो रही है यहाँ उनके इस अधिकार का हनन हो रहा है, बच्चों को शिक्षा का अधिकार है परन्तु सीरिया में बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं। इनके अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए तथा उन्हें जागरूक करने के लिए UNFPA (United Nations Fund For Population Activities) ने पहल की है जिसमें शिविरों के माध्यम से महिलाओं को स्वास्थ्य ,सुरक्षा अधिकार, स्वच्छ पानी एवं भोजन की सेवाएं प्रदान की जा रही हैं।

शरणार्थी संकटः ISIS तथा विरोधियों द्वारा जारी हिंसा में सीरिया के लोग स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगे और स्वयं को तथा अपने परिवार को सुरक्षित रखने के लिए सीरिया से बाहर शरण लेने के लिए मजबूर हो गए परिणामस्वरूप इस गृहयुद्ध से उत्लन्न अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शरणार्थी संकट ने जन्म लिया। ‘The United Nations Fund for Population की रिपोर्ट के अनुसार 15 जुलाई से 15 अगस्त 2013 के मध्य 1.9 मिलियन शरणार्थी सीरिया के पडोसी देशों में बस गए जिसमें से 78% महिलाएं और बच्चे थे तथा 25% महिलाएं गर्भावस्था की स्तिथि में थी।’[1]

[1] UNFPA”Regional Report For Syria Crisis,Issue No.10 Period Covered:15-July-15-August-2013

शरणार्थियों के रूप में सीरिया के लोग यूरोप के देशों में बसे हुए हैं। जिसमें जर्मनी, इटली, तुर्की और ग्रीस में अधिक संख्या में हैं।

साहित्य की समीक्षा

- Barnard & Droubi (2013), इनके द्‌वारा लिखे गए इस लेख में इन्होने ईरान के आतंकी संगठन 'हिजबुल्लाह' का वर्णन किया हैं। ये संगठन सीरिया में गृहयुद्ध के समय से ही (हसून 'नसरल्लाह' जो कि हिजबुल्लाह संगठन का नेतृत्व करता है) सीरिया की बाथ दल का समर्थन किया है, यह ईरान का आतंकी संगठन है और सीरिया के राष्ट्रपति असद का समर्थन इसलिए कर रहा है क्योंकि सीरिया की सरकार मुस्लिम शाखा शिया प्रमुख है और ईरान शिया बहुमत वाला राज्य है और ISIS का विरोधी है, इसलिए ISIS के खिलाफ यह सीरिया के समर्थन में है। हिजबुल्लाह ने सीरिया में ISIS पर हवाई हमले किए परन्तु इन हमलों में वहाँ के लोग घायल होने लगे और असद विरोधियों ने हिजबुल्लाह का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। हिजबुल्लाह संगठन का समर्थन लेना राष्ट्रपति असद के लिए इसलिए भी आवश्यक हो गया था क्योकि इस संकट में सीरिया आन्तरिक रूप से असमर्थ हो गया जिससे उसे आर्थिक सहायता की आवश्यकता हुई और ईरान से उसे आर्थिक सहायता के साथ–साथ हिजबुल्लाह जैसे संगठन का समर्थन भी प्राप्त हुआ।
- Hashemi & Poatel (2013), अपनी इस पुस्तक में लेखक ने पूरे मध्य पूर्व के क्षेत्र को ध्यान में रखकर वर्णित किया है कि वर्तमान में सीरिया मध्य पूर्व क्षेत्र एक युद्ध ग्रस्त क्षेत्र बन गया है जिसमें ईराक, ईरान भी शामिल है। वर्तमान में सीरिया में मौजूद आतंकी संगठन ISIS को खाडी देशों (कतर, कुवैत, सऊदी अरब आदि) द्वारा सहायता प्रदान की जा रही है। लेखक ने बाल्कन युद्ध का वर्णन करते हुए कहा है कि 1990 में बाल्कन क्षेत्र में एक धार्मिक युद्ध शुरू हो गया जिसने बाल्कन क्षेत्र को विभाजित कर दिया था। सीरिया में भी वही स्थिति बनी हुई है जिससे गृहयुद्ध के कारण सीरिया दो भागों में विभाजित हो गया है। राष्ट्रपति असद का समर्थन करने वाला समूह और विरोधी समूह जिससे यह संकट जटिल होता जा रहा है।

- PTI (2013), इस लेख में अमेरिका द्वारा सीरिया के राष्ट्रपति असद को दी गई चेतावनी के बारे में बताया गया है। इस गृहयुद्ध के दौरान राष्ट्रपति असद पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने सीरिया में रासायनिक हमलों को अंजाम दिया है इन आरोपों के प्रतिउत्तर में असद का कहना था कि यदि मेरे द्वारा रासायनिक हमले किए गए हैं तो अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को हर प्रकार की प्रतिक्रिया कर लेनी चाहिए। राष्ट्रपति असद का कहना था कि उनको इस तरह के खतरनाक रासायनिक हमलों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी जो सीरिया के लोगों पर किए गए थे। और सीरिया में इस समय जो स्थिति बनी हुई है उससे यह स्पष्ट है कि सीरिया में केवल उन्हीं की सरकार प्रमुख नहीं है। परन्तु अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और यूरोपीय देशों ने राष्ट्रपति असद पर अपने ही नागरिकों पर रासायनिक हमलों का आरोप लगाया जबकि राष्ट्रपति असद इस बात का खण्डन करते हुए इन आरोपों को गलत ठहराते रहे।
- Erlich (2014), अपनी इस पुस्तक में लेखक ने वर्णित किया है कि सीरिया में जो गृहयुद्ध चल रहा है उसका वर्णन करने के लिए मैं बहुत उत्सुक हूँ। इन्होने वर्णित किया है कि राष्ट्रपति असद के शासन की एक शातिर प्रक्रिया एक हिंसक युद्ध में बदल गई जिसने सीरिया के समाज को लगभग नष्ट कर दिया। यह गृहयुद्ध सीरिया की सरकार और कुछ मुख्य क्षेत्रों की जनता के मध्य उत्पन्न हुआ परन्तु यह संघर्ष अधिक जटिल तब हो गया जब इसमें शिया, सुन्नी, अलावी समुदाय तथा धार्मिक समूह जुड़ गए और कुछ जिहादी समूह जैसे–हिजबुल्लाह, जबात अल–नसरा, और ISIS का अपने हितों को पूरा करने के लिए इस गृहयुद्ध में हस्तक्षेप हुआ। इन्होने शिया और सुन्नी के मध्य इस्लाम धर्म की स्थापना से ही संघर्ष बताया है क्योंकि इन दोनों की विचारधाराएँ एक–दूसरे से भिन्न थी, शिया परम्परावादी विचारों को मानते थे जबकि सुन्नी रूढ़िवादी विचारधारा को अपनाते थे। अलावी भी शिया सम्प्रदाय की एक शाखा है जिनकी संख्या बहुत कम मानी जाती है। इन्होने वर्णित किया है कि राष्ट्रपति असद ने अगस्त 2013 में सीरिया में रासायनिक हमलों का प्रयोग किया था।

- Malu, Omreen, Mohfoud (2014), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक सीरिया की कला एवं संस्कृति को उल्लेखित करते हुए कहते हैं कि जब सीरिया में ऐसा रक्तपात हो रहा है तब इस संस्कृति एवं कला के महत्व के बारे में हम अवश्य बात करेगें। जिसमें काल्पनिक कविताएँ, आलोचनात्मक निबन्ध, हास्यचित्र, कला चित्रण और फिल्म की आवाजें अस्पष्ट हो सकती है क्योकि अब वहाँ पर हथियारों की आवाज लोगों को बहरा कर देने वाली आवाज तक पहुँच गई हैं। ऐसी स्थिति में सीरिया की कला एवं **सं**स्कृति का क्या महत्व रह जाता है? ऐसे प्रश्न हमें अस्पष्ट दिखाई देते हैं जिनका किसी के पास कोई उत्तर नही है। सीरिया में बहुत सारे लोगों का ये मानना था कि जो क्रान्ति राजनैतिक सुधारों के लिए ट्यूनिशिया और मिश्र में हुई सीरिया में उससे अलग होगी और शान्तिपूर्ण तरीकों से समाप्त होगी परन्तु उनका ऐसा सोचना गलत सिद्ध हुआ। 2011 से सीरिया में अलग–अलग जनसमूह बन रहे हैं (शिया एवं सुन्नी मुस्लिम के) जिनकों इस क्रान्ति से पहले प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा था और इन समूहों को वहाँ की सरकार द्वारा नियमित रूप से नियन्त्रित किया जा रहा था। इन्होने हिंसा को उल्लेखित करते हुए सीरिया के सम्बन्ध में एकमात्र यह संदेश दिया है कि हिंसा और हिंसा को दबाना कभी भी सफल नहीं रहा है। सीरिया के विद्रोह को देखा जाए तो ये सीरिया के संघर्षो की सूची में सबसे आगे है। यह स्पष्ट कारण है उन लोगों के अनुभवों का जिनमें से कई अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।
- Beirut (2014), इसके द्वारा प्रकाशित लेख के अनुसार सीरिया की सरकार ने विद्धोहियों पर नियंत्रण पाने के लिए सीरिया के शहर अलेप्पो पर हवाई हमले किए जिसमें 51 लोग जिसमें 13 सीरिया के विरोधी मारे गए। ब्रिटेन स्थिति मानवीय अधिकार संस्था के अनुसार हमले अलेप्पो शहर के उत्तरी भाग में हुए। अलेप्पो सीरिया का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जिसमें हवाई हमले करना सरकार की सेना के अभियान का एक भाग है जिससे शहर को विरोधियों के कब्जे से मुक्त कराया जा सके । इस शहर को विरोधियों द्वारा 2012 के मध्य में नियन्त्रण में कर लिया गया था। ब्रिटेन की इस संस्था का कहना है कि सीरिया में 22 जनवरी से 12 फरवरी 2013 के मध्य 4,959 लोग मारे जा चुके हैं और ये आँकडा केवल 3 सप्ताह का है।

- Dark (2014), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने वर्णित किया है कि मेरे एक मित्र जो सीरिया के रहने वाले हैं उनका इस गृहयुद्ध के बारे में कहना है कि यह गृहयुद्ध एक दिन समाप्त हो जाएगा परन्तु यह शीघ्र नही होगा। यह आन्दोलन अरब लीग का परिणाम है जो ट्यूनिशिया, मिश्र, लीबिया और यमन में आरम्भ हुई। अरब लीग मध्य दिसम्बर में शुरू हुई और धीरे–धीरे मध्य पूर्व के देशों में फैलने लगी। अब पूरे विश्व की नजर सीरिया पर है जहां यह आन्दोलन शान्तिपूर्वक शुरू हुआ परन्तु तीन दिन में सीरिया के दक्षिणी शहर दर्रा में लोगों ने शासन के नियमों को न मानते हुए उसके विरूद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया। सीरिया के लिए यह आन्दोलन पहला और नया नही था इससे पहले भी जब सीरिया फ्रांस के अधीन था तब स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सीरिया ने फ्रांस के विरूद्ध आन्दोलन किया परन्तु सीरिया में यह आन्दोलन आन्तरिक रूप से फैला हुआ है जिसका प्रभाव वहाँ की सरकार और जनता दोनों पर है।
- Rajan (2015), इस पुस्तक में लेखक ने आतंकी संगठन अल–कायदा को वर्णित करते हुए उसके आतंक को परिभाषित किया है। ISIS अल–कायदा संगठन से अलग हो गया है परन्तु यह अलगाव मात्र दुनिया को दिखाने के लिए है आज भी यह पूरा एक संगठन है। इसके आतंक को महिलाओं एवं बच्चों पर वर्णित किया गया है जिसमें Syrian Observatory For Human Rights ने आँकड़े प्रस्तुत किये जिसमें 330 सीरिया की महिलाओं के साथ रेप की घटनाएँ हुई और ISIS के आतंकियों द्वारा इन घटनाओं को अंजाम दिया गया। बच्चों की स्थिति को बताया जाए तो अक्टूबर 2013 से अब तक 6.5 मिलियन बच्चों को सीरिया के बाहर शरणार्थी बनना पड़ा जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर सबसे अधिक देखने को मिला है और शिक्षा से पूरी तरह वंचित हो गये हैं।
- Goldsmith (2015), अपनी इस पुस्तक में लेखक ने वर्णित किया है कि भय मानव के स्वभाव का मूल अंग है। इनके अनुसार सीरिया का संकट उस स्तर पर पहुँच गया है जहाँ पर मानवीय त्रासदी आरम्भ हो गई है और यही कारण है कि यह 20वी शताब्दी की सबसे गम्भीर समस्या बनी हुई है। मार्च 2011 के मध्य में सीरिया संकट वहाँ के दक्षिणी शहर दर्रा में शुरू हुआ जो एक महीने तक केवल इसी शहर में जारी रहा। इस गृहयुद्ध में 190,000 से अधिक लोग मारे

जा चुके हैं, लाखों लोग विस्थापित हो गये हैं और सीरिया की आर्थिक स्थित एवं राज्यों का आन्तरिक ढाँचा पूरी तरह से अव्यवस्थ्ति हो गया है। इस गृहयुद्ध ने सीरिया के समाज को दो समूहों में बाँट दिया है जिसमें नस्लीय समूह और धार्मिक समूह प्रमुख थे। सीरिया में लम्बे समय से असद वंश का शासन रहा है और राष्ट्रपति बशर अल–असद के शासन के दौरान सीरिया में सुरक्षा, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्या बढ़ने लगी।

- Abboud (2015), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने वर्णन करते हुए यह बताया है कि मार्च 2011 में सीरिया के दक्षिणी शहर दर्रा में 50 साल से शासन करने वाली बाथ सरकार के विरूद्ध जो आन्दोलन शुरू हुआ उसने सीरिया के लोगों के दैनिक जीवन को अचानक से बदल दिया। शासन को बदलने के लिए तथा राजनैतिक सुधारों की मांग के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का यह सबसे भयानक एवं अमावनीय तरीके से शुरू किया गया आन्दोलन है। लेखक ने इस संकट को सीरिया की आने वाली पीढी के लिए अनुचित बताया है। बहुत सारे विद्रोही संगठन जैसे–सऊदी अरब, कतर, तुर्की और ईरान इस संकट को देखतें रहे परन्तु किसी ने भी इसके समाधान में कोई प्रयास नही दिखाए। सीरियाई संकट इसलिए भी जटिल हो गया है क्योकि इसमें शिया, सुन्नी, एवं क्षेत्रीय दलों के आपस के संघर्ष सीरियाई समाज को नष्ट कर रहें हैं। लेखक का कहना है कि स्वयं मैं भी इस सवाल के जबाब को जानना चाहता हूँ कि इस संघर्ष में ISIS के अतरिक्त मुख्य भूमिका में कौन है जो इस गृहयुद्ध को और भी भयानक बना रहा है। लेखक के लिए इस घटना के अन्त का उल्लेख करना अत्यन्त जटिल हो गया मुख्यत जब कि इस युद्ध में और भी समूह (शिया, सुन्नी, विरोधी समूह) शामिल हों जो इस गृहयुद्ध को कम करनें के बजाय आगे बड़ाने में भूमिका निभा रहे हैं।
- Alexander & Alexander (2015), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक आतंकी संगठन आई.एस. के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं कि वर्तमान में ये संगठन अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए एक गम्भीर समस्या बन गया है क्योंकि आज विश्व के लगभग सभी देश आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहे हैं। वर्तमान में ये संगठन ईराक और सीरिया में मौजूद है। सीरिया गृहयुद्ध में आई.एस. एक गम्भीर मुद्दा बना हुआ है। 2014 के शुरूआत में जिहादी समूह आई.एस. के बल, हिंसा

और विचारधारा पर ध्यान केन्द्रित किया गया क्योंकि यह संगठन सीरिया में अपनी विचारधारा को फैलाने में हिंसा का सहारा ले रहा है। इस संगठन का प्रमुख नेतृत्वकर्ता अबु बकर अल–बगदादी है। इस संगठन में युवाओं के साथ–साथ छोटे बच्चों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है और शुरूआत में बच्चों और युवाओं को प्रशिक्षण के माध्यम से हिंसक बनाया जाता है जिससे ये मात्र हिंसा का समर्थन करतें हैं।

- Sorenson (2016), अपनी इस पुस्तक में लेखक ने वर्णित किया है कि 2011 से सीरिया को परिभाषित करने का केवल एक ही शब्द है 'गृहयुद्ध' जिसमें हम केवल तबाही देखतें हैं। इस गृहयुद्ध में अधिक से अधिक हथियारों का प्रयोग और इस्लामिक स्टेट ने सीरिया तथा उसकी धार्मिक विरासत को नष्ट कर दिया है जिससे सीरिया का इतिहास जुड़ा हुआ था। इसमें वर्णित किया गया है कि ऐसे बहुत कम देश है जो इतने बडे स्तर पर विध्वंस से पीढ़ित है। यह त्रासदी और भी भयावह हो सकती थी अगर यह केवल सीरिया तक सीमित होती तो परन्तु यह युद्ध 2014 के शुरूआत से शुरू होकर सीरिया में तथा इसके बाद इसने धीरे–धीर सीरिया के पडोसी देश जैसे– ईराक, जार्डन की सीमा, उसके बाद तुर्की की सीमा और लेबनॉन के पूर्वी तथा दक्षिणी क्षेत्र को अपने प्रभाव में ले लिया। लेखक वर्णित करता है कि एक ऐसी नई दुनिया को देखना आश्चर्य की बात है जिसमें केवल हिंसा है जैसे वहाँ के नागरिकों पर हथियारों का प्रयोग करना, सड़कों पर जुलूस निकालना, पथराव करना आदि। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सीरिया में बढ़ती हुई हिंसा को देखकर यह आशा व्यक्त की कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय मुख्यतः रूस से कि असद शासन में हुई इस हिंसा को अंतरिम रूप से नियन्त्रण में किया जाए। ऐसा रूस और सीरिया के मध्य सम्बन्धों को देखते हुए कहा गया।
- Robert (2016), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने 2015 में शरणार्थियों के शिविर बेका बिले में शरणार्थियों की दशा के बारे में जानने के लिए दौरा किया जहाँ पर उनकी मुलाकात एक सीरियन शरणार्थी मुहम्मद नाम के व्यक्ति से हुई जो औपचारिक रूप से वहाँ अपना जीवन यापन कर रहा था लेखक ने उनकी दशा को देखकर चिंता व्यक्त की और बडी ही जटिलता से उनके शिविर की ओर दृष्टि डाली जो बहुत पुराने एवं जर्जर स्थिति में थे। उस मुहम्मद नाम के

व्यक्ति ने बडी भावुक आवाज में लेखक से अपना हाल बताया कि वह एक भंयकर रोग डायबिटीज से ग्रस्त है वह लगातर असहनीय दर्द में है और फिर भी वह आपात कालीन अस्पतालीय सुविधा तक पहुँचने में असमर्थ है क्योंकि उसका मानना है कि उसकी स्थिति अभी जानलेवा नहीं है इसने यह स्वीकार किया है कि लेबनॉन के लोग अब हमसे नफरत करते हैं क्योंकि हम शरणार्थियों के रूप में यहाँ पर हैं।

- Zamon (2016), लेखक ने अपनी पुस्तक में मुख्यतः उन लोगों पर ध्यान केन्द्रित किया है जो सीरिया संकट के दौरान अपने देश से विस्थापित हो चुके है और उनका जीवन अत्यन्त संघर्ष से गुजर रहा है क्योकि लोग अपना पैतृक स्थान छोड़कर अन्य स्थानों पर अपना जीवन व्यतीत करने को मजबूर हैं परन्तु यहाँ भी उन्हें हिंसा का डर रहता है। लेखक द्वारा उन लोगों से चर्चा कर अपने अनुभव साझा किए जिसमें उन लोगों ने बताया कि सीरिया में ऐसा कोई स्थान नही बचा जहाँ वो स्वयं को सुरक्षित रख सकें इसलिए इन लोगों ने सीरिया से बाहर प्रस्थान करना प्रारम्भ कर दिया।
- Lister (2016), प्रस्तुत पुस्तक लेखक के 4 साल के अनुभव के आधार पर लिखी गयी है। अपने अनुभवों को आधार बना कर इन्होने सीरिया को वर्तमान इतिहास में सबसे बड़ा दुखद आन्दोलन और गृहयुद्ध बताया है। यह गृहयुद्ध 2011 से शुरू हुआ और चार साल बाद 2015 से सीरिया सबसे जटिल सुन्नी जिहादी आन्दोलन बन गया। सुन्नी जिहादी इसलिए बना क्योकि सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल असद शिया समुदाय से हैं जिसका विरोध सुन्नी मुसलमानों ने आन्दोलन में शामिल होकर किया। वर्तमान में सीरिया विश्व के जिहादी समूहों में से एक है। एक अनुमान के आधार पर ये बताया गया कि सितम्बर 2015 में कम से कम 30,000 गैर सीरियाई नागरिकों ने जिहाद को अपनाया था। इन जिहादी समूहों में अल कायदा का आतंकी संगठन 'जबात अल–नसरा' जिसने सीरिया में अपने आप को IS के हमलों से पहले स्थापित कर लिया था इसलिए सीरिया की जिहादी पृष्ठभूमि इतनी जटिल हो गयी है क्योकि इसमें एक से अधिक जिहादी समूह अपने स्तर से इस आनदोलन को बढ़ावा दे रहे हैं। विद्रोही समूह की विफलताओं से ये जिहादी समूह सीधे–सीधे लाभान्वित होते हैं क्योकि ये समूह विरोधी समूह के क्षेत्र पर कब्जा

करने में समर्थ हो जाते हैं। ये जिहादी समूह अधिक वित–पोषित होने के कारण कुछ विशेष शक्तिशाली हथियारों का प्रयोग करते हैं परिणामस्वरूप ये जिहादी समूह कोई भी जंग आसानी से जीत लेते हैं।

- Ferris & Kirisei (2016), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सीरिया के आन्तरिक संघर्ष को वर्णित किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सीरिया की स्थिति ऐसी बनी हुई है जिसमें विस्थापन का क्रम लगातार बना हुआ है। 'United Nations High Commissioner For Refugee' के आँकडों के अनुसार 2014 में हिंसा और संघर्ष के कारण लगभग 60 मिलियन लोगों को अपना घर छोडकर पलायन करना पड़ा था। सीरियाई संघर्ष और उससे उत्पन्न विस्थापन की समस्या यह स्पष्ट संकेत करती है कि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के लिए इस संघर्ष को रोकना एवं हल करना बेहद चुनौतीपूर्ण हो गया है मुख्यतः मध्य पूर्व के क्षेत्र में। 2015 में इस संघर्ष का सबसे अधिक प्रभाव यूरोप में दिखाई दिया क्योकि सीरिया के लोग अधिक संख्या में वही पहुँच रहे थे। इस समस्या को कम करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शरणार्थी समस्या कम करने के लिए विस्थापित लोगों को एक दूसरे देशों के साथ साझा करने की प्रक्रिया अपनाई गई जैसे तुर्की जर्मनी, इटली आदि देशों ने शरणार्थी संकट के लिए एक–दूसरे को सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया।
- Sriwastav (2016), इस लेख में लेखिका ये उल्लेखित करती हैं कि वर्तमान समय में सीरिया में गृहयुद्ध मानवतावाद की सबसे बडी घटना है। ये वर्णित करतें हुए कहती हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय भी इस गृहयुद्ध को लेकर तब चिंतित हुआ जब 2015 में हजारों सीरिया के शरणार्थी यूरोपियन देशों में (मुख्यतः–ग्रीस) प्रवेश करने लगे। इस गृहयुद्ध से सुरक्षित स्थानों तक पहुचने में सीरियाई बच्चे मानव तस्करी का शिकार आसानी से होने लगे क्योकि ऐसी स्थिति में मानव तस्करी समूह भी सक्रिय होने लगे जिनको आसानी से छोटे बच्चे प्राप्त होने लगे परिणामस्वरूप मानव तस्करी जैसी गम्भीर समस्या भी उत्पन्न हुई। सीरिया में संकट मुख्यत अरब क्रान्ति का परिणाम है जब 2011 में ट्यूनिशिया में राजनीतिक सुधारों की मांग बड़ने लगी और यही से ये धीरे–धीरे लीबिया, सीरिया जैसे देशों में ये क्रान्ति फैलने लगी। इस आन्तरिक अशान्ति से

सीरिया आन्तरिक रूप से कमजोर हो गया और वहाँ के राष्ट्रपति ने अपने सहयोगी मित्र देश रूस से आर्थिक सहायता एवं ईरान से हाथियारों की पूर्ती शुरू की जिससे ईरानी संगठन 'हिजबुल्लाह' लेबनॉन में रहकर सीरिया की सहायता के लिए तत्पर है।

- Mater (2017), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने उल्लेखित करते हुए कहा है कि सीरिया इस समय एक भयानक युद्धग्रस्त देश बन गया है। इस गृहयुद्ध के कारण सीरिया के राज्य अपने भौगोलिक क्षेत्र से अपना नियन्त्रण खो चुके हैं क्योकि उन राज्यों पर ISIS ने अपना आधिपत्य कर लिया है, जिसमें ISIS द्वारा सीरिया के रक्का एवं पूर्वी अलेप्पो शहर को अपनें नियन्त्रण में ले लिया गया । सीरिया के गृहयुद्ध में 220,000 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और 7.5 मिलियन लोग आन्तरिक रूप से विस्थापित हो चुके हैं, उसके अतरिक्त 4 मिलियन लोग पडोसी देश जैसे– तुर्की, लेबनॉन, जार्डन और ईराक में पलायन कर चुके हैं। 12.2 मिलियन लोग जिनमें से 5.6 मिलियन बच्चे हैं और प्रत्येक 5 व्यक्ति में से 4 व्यक्ति भुखमरी का शिकार हैं। इस गृहयुद्ध का परिणाम बी.बी.सी (2015) के एक सर्वे द्वारा ज्ञात हुआ जिसमें 2.6 यू.एस मिलियन डॉलर की हानि सीरिया में आंकी गई है।
- Kale (2017), यह लेख अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सीरियाई शरणार्थियों को बचाने की तथा अन्य देशों में शरणार्थियों के आदान–प्रदान के परिणामों का विश्लेषण करता है। इसमें लेखक ने वर्णित किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शरणार्थी बोझ आदान–प्रदान प्रणाली (यह बोझ प्रणाली शरणार्थियों को दो आधारों पर विभाजित करती है–1. न्याय के आधार पर 2. परिणाम के आधार पर। न्याय के आधार पर–इसमें शरणार्थियों को उनको देश की जी.डी.पी. जनसंख्या और क्षेत्रीय आकार के आधार पर लिया जाता है। परिणाम के आधार पर–इसमें शरणार्थियो को देश की आन्तरिक सुरक्षा तथा उस देश के साथ द्विपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के आधार पर लिया जाता है।) ने क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सीमित उन्नति प्राप्त कर ली है सीमित उन्नति इसलिए कहा गया क्योंकि शरणार्थियों की सबसे बडी मुश्किल है कि वे कहाँ जाए? लेबनॉन, जार्डन और तुर्की ही ऐसे देश है जहाँ सीरियाई शरणार्थियों ने शरण ली है। 1961 में एक सम्मेलन को संगठित किया जिसका उद्‌देश्य उन लोगों के हितों की रक्षा करना था जो शारणार्थियों का

जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस लेख का मुख्य उद्देश्य शरणार्थियों के बोझ का अन्य देशों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है तथा उनकी सुरक्षा की आवश्यकता को दृष्टिगोचर करना है। इस लेख के पहले भाग में शरणार्थी बोझ के आदान–प्रदान प्रणाली और उनकी सुरक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के अलावा विभिन्न देशों के मध्य चर्चा का विश्लेषण किया गया है। इसका दूसरा भाग शरणार्थी संकट को परिभाषित करता है तथा इसका तीसरा और आखिरी भाग शरणार्थी बोझ प्रणाली के बारे में बताता है जो मुख्य रूप से सीरिया के शरणार्थी और तुर्की की जनता को ध्यान में रखता है।

- Dam (2017), प्रस्तुत पुस्तक लेखक ने सीरिया में अपने अनुभव के आधार पर लिखी है। इन्होनें वर्णित किया है कि 1964 में पहली बार ये सीरिया की यात्रा पर गए जहाँ उस समय ये स्थिति थी कि किसी भी स्थान पर बिना किसी भय के आसानी से जा सकतें थें। सीरिया में यात्रा के दौरान अप्रत्याशित तरीके से सीरिया के कुछ छात्रों से मिलना हुआ जिन्होने लेखक को अपने गाँव में रातभर रूकने के लिए आमन्त्रित किया। लेखक ने उनके पारम्परिक व्यवहार को वर्णित करतें हुए कहा कि सीरिया के लोगों द्वारा पहली बार मैने इतने आदर–सम्मान का आनन्द लिया। अब लेखक की आखिरी यात्रा सितम्बर 2010 में सीरिया की राजधानी दमिश्क में हुई उस समय सीरिया की जो स्थिति थी उसकी कल्पना करना भी कठिन था पूरे देश में आन्दोलन फैल चुका था परिणाम स्वरूप 2017 तक 400,000 से अधिक सीरिया के लोग मारे गए।
- Freedman (2017), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने ये उल्लेखित किया है कि सीरिया में जो गृहयुद्ध चल रहा है जिसने लगभग 7 मिलियन लोगों को सीरिया से बाहर शरण लेने के लिए बाध्य कर दिया है। सीरिया के लोग आज भी इस आशा में जीवित है कि शायद यह गृहयुद्ध जल्द ही समाप्त हो जाए। इस गृहयुद्ध से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो विस्थापन हुआ है उससे यह स्पष्ट और गम्भीर प्रश्न बना हुआ है उन शक्तिशाली देशों (रूस, अमेरिका) के लिए जो मानव अधिकारों एवं उनकी रक्षा के लिए बात करते हैं। ऐसी घटनाएँ जो सीरियाई शरणार्थियों के विरूद्ध हिंसा को उजागर करती है उनमें शरणार्थियों के शिविरों जहाँ पर वे अपना जीवन यापन करते हैं उन शिविरों के बाहर और अंदर हिंसा का ड़र तथा श्रमिक बाजार में उनके साथ

शोषण, लिंग आधारित हिंसा आदि घटनाएँ हैं। इस भय से अधिकतर सीरियाई शरणार्थी अपने पडोसी देशों (ईराक, लेबनॉन, जार्डन) में रूक गए। सीरिया के कुछ लोग यूरोपियन यूनीयन पहुँचने के प्रयास में थें जिनको यूरोप के राजनीतिक प्रमुखों तथा मीडिया ने शरणार्थी संकट का नाम दे दिया। जिसमें से हजारों शरणार्थी अपने प्रयासों से यूरोप पहुँचने में सफल रहे तथा कुछ लोगों को अपने लक्ष्य तक पहुचने में अपने मार्ग में बाधाओं का सामना करना पड़ा।

- Dhingra, Kataria (2017), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सीरिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर वर्तमान स्थिति को दृष्टिगोचर किया है। इनके अनुसार हाफिज अल–असद की मृत्यु के बाद सीरिया की संसद ने संविधान में एक महत्वपूर्ण सशोंधन किया जिसमें राष्ट्रपति पद के लिए कम से कम 40 की आयु को कम करके 34 कर दिया गया इस सशोंधन का एक महत्वपूर्ण कारण हाफिज अल असद के बेटे बशर अल असद को सत्ता में लाना था। 10 जुलाई 2000 को बशर अल–असद चुनावी प्रक्रिया द्वारा राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित हुए। सीरिया सरकार के आँकड़ों के अनुसार इस चुनावी प्रक्रिया में असद को 97.29 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। इस दौरान सीरिया में बहुत सारे राजनैतिक मंच तैयार हो गए जहाँ पर कुछ बुद्धिमान लोग राजनीति और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करने लगे। जिनमें से रियाद सैफ, हैथम अल–मलेह, रियाद अल टर्क और आरेफ डलीला जैसे कुछ महत्वपूर्ण लोग थे जो एक राजनैतिक मुद्दे को एक मंच से आगे बढ़ाकर आन्दोलन के रूप में ले गए और इस आन्दोलन ने उग्र रूप ले लिया। इस आन्दोलन का एक मुख्य कारण ये था कि ये आन्दोलनकर्ता संविधान में हुए सशोंधन के खिलाफ थे, जिसके परिणाम स्वरूप सीरिया गृहयुद्ध में बाहरी देशों का हस्तक्षेप भी हो गया जिसमें मुख्य रूप से अमेरिका और रूस, इनके अलावा सऊदी अरब, ईरान, ईराक का भी हस्तक्षेप सीरिया में देखा गया।
- Faksh & Ryan (2017), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ये वर्णित करते हैं कि सीरिया सुन्नी बहुमत वाला देश है (सुन्नी इस्लाम, की एक शाखा है) परन्तु इसके अतिरिक्त सीरिया में बहुत सारे सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं जैसे– अलावी, कुर्द, अर्मेनियन, अरब आदि। सीरिया के इतिहास के बारे में उल्लेखित करते हुए कहा गया है कि सीरिया के राष्ट्रपति हाफिज

अल–असद ने 1970 से 2000 तक सीरिया में शासन किया और सीरिया में अब तक के इतिहास में सबसे लम्बा कार्यकाल रहा है। अपने कार्यकाल के दौरान हाफिज अल असद ने सीरिया को नियन्त्रणता एवं स्थिरता प्रदान की क्योकि जब सीरिया ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की उस समय सीरिया को एक ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता थी जो देश को आगे ले जाए और यह कार्य हाफिज अल असद ने अपने कार्यकाल के दौरान किया।

- Mater (2018), इस पुस्तक में लेखक ने वर्णित किया है कि 1946 में सीरिया ने औपनिवेशवाद के विरूद्ध जीत हासिल की है, क्योकि 1946 से पहले सीरिया पर फ्रांस का आधिपत्य था। आजादी के बाद से ही सीरिया अपने देश में साम्राज्यवादी नीति को रोकने के लिए संघर्ष कर रहा है। सीरिया ने अपनी पहली राष्ट्रीय सभा (1954) के साथ प्रगतिशील सुधारों की ओर कदम बढ़ाया और यह युग सीरिया के लिए समाजवादी युग रहा। इस तरह सीरिया धीरे–धीरे एक समृद्ध और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर राष्ट्र बन गया। इस तरह 1970 में पहली बार हाफिज अल असद सीरिया के राष्ट्रपति बने और 2000 तक सत्ता में रहे।
- Eid (2018), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बताया है कि जब 21 अगस्त 2013 में सीरिया की राजधानी दमिश्क में रासायनिक हमले हुए तब लोगों के पास एक ही सवाल था आखिर रासायनिक हमले कैसे हुए ? इन हमलों में 1,429 लोग मारे गए जिनमें बच्चे भी थे। लेखक स्वयं इन रासायनिक हमलों के दौरान सीरिया में मौजूद थे और उन्होंने अपने दोस्तों एवं अपने पड़ोसियों को इन हमलों में मरते हुए देखा है। सीरिया में इन रासायनिक हमलों के बाद आन्दोलन शुरू हो गया जिसने गृहयुद्ध का रूप ले लिया अब इस गृहयुद्ध को 8 साल होने वाले हैं लेकिन सीरिया की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया है।
- Hinnebusch & Saouli (2019), प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने वर्णन किया है कि कैसे सीरिया के गृहयुद्ध मे बाहरी देशों का हस्तक्षेप हो रहा है जिससे वैश्विक स्तर पर यह संघर्ष और भी जटिल होता जा रहा है। 2012 में जब यह गृहयुद्ध शुरू हुआ तब रूस ने सीरिया में राष्ट्रपति असद को सहायता प्रदान की। इस गृहयुद्ध में रूस के हस्तक्षेप से ही यह गृहयुद्ध अत्यन्त

जटिल हो गया। उसके बाद जब इस्लामिक स्टेट ने सीरिया के रक्का शहर पर अपना कब्जा कर लिया। अमेरिका और रूस के हस्तक्षेप ने सीरिया को दो भागों में विभाजित कर दिया।

शोध अंतराल

1. अब तक जो अध्ययन किय गये हैं वह सीरिया एवं उसके पडोसी देशों के साथ सम्बन्धों एवं संघर्षो के अध्ययनों पर आधारित हैं परन्तु ऐसे अध्ययनों का अभाव है जो विशिष्ट रूप से सीरिया में हो रहे गृहयुद्ध में मानव अधिकारों के हनन से सम्बन्धित हो।
2. अब तक जो अध्ययन किय गये हैं वो सीरिया की आन्तरिक राजनीति एवं अर्थिक व्यवस्था का तो अध्ययन करते हैं परन्तु विशिष्ट रूप से सीरिया में उत्पन्न गृहयुद्ध का आतंकवाद के विकास में जिस तरह से प्रभाव पड़ रहा है ऐसे अध्ययन का अभाव रहा है।
3. अब तक जो भी अध्ययन हुए हैं वो आतंकी संगठन का मध्य पूर्व में प्रभाव का अध्ययन करते हैं परन्तु मात्र सीरिया की आंतरिक व्यवस्था पर आतंकी संगठन के हस्तक्षेप, परिणाम व इससे सीरिया में मानव तस्करी की समस्या उत्पन्न हो रही है इस प्रकार के अध्ययनों का वर्तमान में अभाव रहा है।

समस्या कथन

सीरिया आधिकारिक रूप से अरब गणराज्य राष्ट्र है। यह मध्य पूर्व का एक छोटा सा देश है जो भूमध्य सागर के पूर्वी किनारे पर तथा लेबनॉन और तुर्की के मध्य में स्थित है। सीरिया की राजधानी दमिश्क है जो इसका सबसे समृद्ध भाहर है। सीरिया इस समय आन्तरिक अशान्ति से गुजर रहा है। जिसके कारण वहाँ के लोगों में सरकार और राष्ट्रपति बसर अल असद के प्रति विद्रोह है। लम्बे समय तक एक ही दल के शासन करने के बाद लोग अब पूर्ण लोकतंत्र की मांग कर रहे हैं। इस कारण सीरिया की सरकार और विद्रोहियों के मध्य संघर्ष उत्पन्न हो गया और सीरिया दो भागों में विभाजित हो गया। एक तरफ वे लोग जो राष्ट्रपति असद के समर्थन में खड़े थे तो दूसरी तरफ वो लोग जो इसका विरोध कर रहें थे तथा सीरिया में अन्य राष्ट्रों (विकसित देशो- अमेरिका, रूस) एवं क्षेत्रीय ताकतों का

हस्तक्षेप होने लगा जिसके कारण वहाँ राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो गयी जिसका सीधा लाभ आई. एस.आई.एस. ने उठाया तथा सीरिया में कब्जा भुारू कर दिया, परिणामस्वरूप महिलाओं एवं बच्चों के मानव अधिकारों का हनन होने लगा। वहीं दूसरी तरफ वहाँ की राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठा कर आई.एस.आई.एस. ने सीरिया में अपना कब्जा करना प्रारम्भ कर दिया तथा क्षेत्रीय व अन्य विश्व के राष्ट्रों ने भी हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। इस संघर्ष के दौरान वहाँ के निवासी मारे जाने लगे जिससे उन्होंने सीरिया से पलायन करना शुरू कर दिया और इससे शरणार्थी संकट सामने आया। इस गृहयुद्ध का सबसे ज्यादा नकारात्मक प्रभाव सीरिया की महिलाओं व बच्चों के मानव अधिकारों पर पडा जिसमें उनकी स्वतंत्रता (जीवन जीने की, भोजन की, कार्य करने की) का व्यापक रूप से हनन होने लगा।

उद्देश्य

1. सीरिया के इतिहास एवं वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. सीरिया में विदेशी एवं क्षेत्रीय ताकतों के हस्तक्षेप का अध्ययन करना।
3. सीरिया में इस्लामिक स्टेट ईराक एण्ड सीरिया (आई.एस.आई.एस.) के प्रसार का अध्ययन करना।
4. सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न महिलाओं एवं बाल शरणार्थियों के संकट का अध्ययन करना।
   - संयुक्त राष्ट्र संघ में वर्णित महिलाओं व बच्चों से सम्बन्धित मानव अधिकारों का अध्ययन करना।
   - सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न महिलाओं एवं बच्चों के मानव अधिकारों (मानव तस्करी) के हनन का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. सीरिया लम्बे समय से गृहयुद्ध की स्थिति में है।
2. सीरिया में विदेशी एवं क्षेत्रीय ताकतों के हस्तक्षेप से राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई है।
3. सीरिया में राजनीतिक अस्थिरता के कारण आई.एस.आई.एस को प्रसार करने का अवसर मिला है।

4. सीरियाई शरणार्थियों की समस्या विश्व की समस्या है।

- संयुक्त राश्ट्र संघ द्वारा महिलाओं एवं बच्चों के मानव अधिकारों की सुरक्षा व सम्मान हेतु प्रावधान किये गये हैं
- सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न स्थिति से महिलाओं व बच्चों के मानव अधिकारों (मानव तस्करी) का हनन हो रहा है तथा इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभाव पड़ रहा है।

अध्ययन का महत्व

- प्रस्तुत शोध 'सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न महिला एवं बाल मानव अधिकारों के हनन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' यह दर्शाता है कि हिंसा किसी भी देश की राजनीति को अव्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सीरिया संकट अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक ऐसा मुद्दा बना हुआ है जो निरन्तर संघर्ष की ओर अग्रसर हो रहा है। प्रस्तुत शोध सीरिया संकट की महत्वपूर्ण जानकारियों का उल्लेख करता है जो इस संकट को निरन्तर आगे करने का प्रयास कर रही हैं।
- सीरिया गृहयुद्ध से जहाँ ISIS जैसे आतंकवादी संगठन को लाभ प्राप्त हुआ है वहीं दूसरी तरफ निर्दोष नागरिकों विशेषकर महिलाओं और बच्चों के मानव अधिकारों का हनन हो रहा है तथा महिलाओं व बच्चों की तस्करी से आतंकवादी संगठन मजबूत हो रहे हैं जिसका प्रभाव सम्पूर्ण विश्व व भारत में भी पड़ेगा इसलिए इस विषय पर शोध की आवश्यकता है।
- इस शोध के माध्यम से उन विभिन्न पहुलुओं का अध्ययन किया जा सके जो सीरिया संकट के कारकों व समाधान के लिए सहायक हो सकें। इस शोध के माध्यम से सीरिया संकट से उत्पन्न सीरिया के क्षेत्र में मानव अधिकार (महिलाओं एवं बच्चों) के तथा उनके समाधान के लिए समुचित सुझावों की खोज का प्रयास करना है। यह शोध उन सभी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा जो भविष्य में इस क्षेत्र में कार्य करने के इच्छुक होगें।

सीरिया में कार्य करने वाले NGOs

माफ (MAF; Majid Al-Futtaim) यह सीरियन कुर्द संगठन है जो 2004 से सीरिया में मानव अधिकारों से सम्बन्धित लोगों को जागरूक कर रहा है। सीरियाई गृहयुद्ध के दौरान यह संगठन अधिक सक्रिय हुआ और मानव अधिकारों से संबंधित अन्तर्राष्ट्रीय काननू एवं संधियों से कार्यशालाओं के माध्यम से अवगत कराने का कार्य कर रही हैं।

हरास नेटवर्क (Hurras Network) – यह संगठन 2012 से सीरिया की राजधानी दमिश्क में सक्रिय हुआ। यह बच्चों को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में सहयोग प्रदान करता है। यह बच्चों के अधिकारों के बारे में जागरूक करता है कि किस प्रकार बच्चों में सामाजिक कार्यों में रूचि उत्पन्न की जा सकती हो एवं उन्हें एक सुरक्षित वातावरण प्रदान करना जिससे उनकी क्षमता के अनुसार विकास किया जा सके।

हरास बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करने में सहयोग करता है जिसमें उनका बचपन स्वस्थ एवं सुरक्षित रह सके। 2012 से अब यह संगठन 16000 बच्चों को सहायता प्रदान कर चुका है।

Syrian Network for Human Rights – मानव अधिकारों से सम्बन्धित यह संगठन सीरिया में लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। SNHR की रिपोर्ट के अनुसार कम से कम 127000 लोगों की मौत हो चुकी थी। मार्च 2011 से सितम्बर 2019 के मध्य इसने अपने आँकड़े प्रस्तुत किए जिसमें 14298 व्यक्ति मारे गए जिसमें 178 बच्चे और 63 महिला शामिल थी।

Syrian Observation for Human Rights – इस संस्था ने अपने आँकड़ें प्रस्तुत किए जिसमें 2011 से सीरिया में गृहयुद्ध चल रहा है जिसमें कम से कम 560000 लोग मारे गए जिसमें 20819 लोग 18 वर्ष से कम उम्र के थे और 13084 महिलाएँ शामिल थी।

शोध पद्धति

शोध प्रचना वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

तथ्य संकलन :– प्रस्तुत शोध द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित है। द्वितीय स्त्रोतों के प्रमुख स्त्रोतों में संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिवेदन, संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकार के प्रतिवेदन, वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी), पुस्तकें, लेख, समाचार पत्रों एवं इंटरनेट वेबसाइट के तथ्यों को प्राप्त किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्याय

प्रथम अध्याय– प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय– सीरिया के इतिहास एवं वर्तमान स्थिति

तृतीय अध्याय – सीरिया में विदेशी एवं क्षत्रीय ताकतों का हस्तक्षेप

चतुर्थ अध्याय – सीरिया में इस्लामिक स्टेट इराक एण्ड सीरिया (आई.एस.आई.एस.) का प्रसार

पंचम अध्याय – सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न महिलाओं एवं बाल शरणार्थियों का संकट

षष्ठम अध्याय – सीरियाई गृहयुद्ध से उत्पन्न महिलाओं एवं बच्चों के मानव अधिकारों (मानव तस्करी) का हनन

सप्तम अध्याय– निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ

BOOKS

- Abboud N.,(2015) "Syria", John Willey& Son &,2015.
- Alexander & Alexander,(2015)" The Islamic State: Combating The Caliphate Without Borders," Lexington Books,New York.
- Barnard A. & Droubi H. (2013),"Hezbollah Attacked Form Syria, New York Times.
- Eid K. (2018)," My Country: A Syrian Memoir: Bloomsbury Publishing,
- Erlich R. (2014), Inside Syria: The Backstory Of Their Civil War And World Can Expect, Prometheus Books.
- Dhingra I. & Kataria S. (2017),"Tomahawks over Syria: Final Trailer of Third World War ," Manakin Press;p-3,8-13,New Delhi.
- Dam N. (2017),"Destroying A Nation: The Civil War In Syria," Bloomsbury Publishing: London
- Dark D. (2014)," My House In Damascus: An Inside View Of The Syrian Revolution," Haus Publishing.
- Foksh M. & Curtis (207): Syrian Arab Republic," Viva Books, New Delhi.

- Freedman J. (2017)," A Gendered Approach To The Syrian Refugee Crisis", Rutledge, New York.
- Ferris G.& Kemal K. (2016)," The Consequence Of Chaos: Syria's Humanitarian Crisis And Failure To Protect," Brooking Institution Press, Washington,D.C.
- Robert G. (2016)," The Syrian Refugee Crisis In Lebanon: The Double Tragedy Of Refugees And Impacted Host Communities," Lexington Books, New York. London.
- Goldsmith T.(2015) Cycle Of Fear: Syria's Alawites In War And Peace, Oxford University Press, London.
- Hashemi N. & Postel D. (2013),"The Syria Dilemma," MIT Press, Cambridge,Mass, London, England.
- Hinnebusch & Saouli (2019)," The War For Syria: Regional And International Dimensions Of The Syrian Uprising," Routledge.
- Lister R. (2016)," The Syrian Jihad: Al-Qaeda, The Islamic State And The Evolution Of An Insurgency," Oxford University Press, New York.
- Malu H., Omreen Z., Mohfoud N. (2014)," Syria Speaks: Art And Culture From The Frontline ," Saqi,2014.
- Matar L. (2017)," The Political Economy of Investment In Syria," Springer.
- Mater L. (2018)," Syria: From National Independence to Proxy War," Springer, Singapore.
- Sorenson S. (2016)," Syria In Ruins: The Dynamics Of The Syrian Civil War, Abc-Clio, California.
- Rajan J. (2015)," Al Qaeda's Global Crisis: The Islamic State, Takfire And The Genocide Of Muslim," Routledge, New York.
- Warrick J. (2015),”Black Flags: The Rise, Fall and Rebirth of the Islamic State”. Random House, Press 2015;p-7
- Zamon T. (2016)," Islamic Traditions Of Refugee In Crises Of Iraq And Syria," Springer, 2016.

Websites

- Beirut (2014), 51 Killed In Syrian Airstrikes Sniper Fire In Aleppo,Febuary 13,2014 Available at https//Indianexprss.com/article,world/middle-east-africa,Accessed on August 5 2019.
- PTI (2013), Expect Everything if You Attack Syria: Assad to US, September 9,2013, Available at hppps//Indianexprss.com/article, Accessed on August 11,2019.
- Sriwastav N.(2016),The Syrian Question,April 18,2016, Available at,https;//indianexpress.com/ article/opinion/columns/syria-civil-war-refugee-islamic state,Accessed on August 10,2019
- UNFPA Regional Situation Report on Syria Crisis, 15 July,2013 Issue No.10,Period covered.
- https://www.rand.org./topics/the-islamic-state-terrorist-organisation.html.accessed on Septemner 9,2019
- https;//www.un.org/en/section/issues-depth/human-rights.accessed on September 2,2019
- https://www.globalfundforwomen.org/women-human-rights,San Francisco.accessed on August 17,2019.
- https://www.infoplease.com,world,countries.syria.accessed on July 27,2019